कंचना कुमारी
अतिथि शिक्षक, हिन्दी
यू. आर. कॉलेज, हिन्दी

(1) भक्ति काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

भक्तिकाल में निर्गुण और सगुण धाराओं के परस्पर भिन्न मत विश्वास विचार और मान्यतायें थी किन्तु इनमे कुछ प्रवृत्तियाँ ऐसी भी है जो दोनो मे समान रूप से पाई जाती है।

(1) गुरु महिमा — 'सन्त काव्य' प्रेम काव्य, राम भक्ति शाखा तथा कृष्ण भक्ति साहित्य मे गुरु महिमा का समान रूप से प्रतिपादन मिलता है। जहा कबीर गुरु को गोविन्द से बड़ा बताया है। वहा जायसी का कहना है कि 'बिनु - गुरु - जगत को निरगुन पावा'। तुसली 'जहा बन्दो गुरु पद कंज, कृपा सिन्धु नर हरि' कह कर गुरु के प्रति अपार श्रद्धा का प्रदर्शन करते है वही भक्तवर सुरदास को अपने गुरु वल्लभाचार्य के बिना संसार अन्धकार मय लगता है "श्री वल्लभ - नख - चन्द्र छटा बिन सब जगमाहि अंधेरी।"

(2) भक्ति की प्रधानता — इस काव्य की चारो काव्य धाराओं अर्थात सन्त, प्रेम, राम तथा कृष्ण साहित्य में ईश्वरासन के लिए भक्ति पर समान बल दिया गया है। यद्यपि कबीर के ईश्वर निराकार है और वे ज्ञान गम्य है किन्तु भक्ति के बिना उसकी प्राप्ति नहीं होती

(2)

भक्ति ज्ञान का प्रमुख साधन है —
"हरि भक्त जाने बिना बूडि मुआ संसार"
जायसी ने शरीयत, तरीकत, हकीकत और मारिफत इन चारों साधनों को भगवद्भक्ति के लिए आवश्यक बतलाया है राम एवं कृष्ण साहित्य में वैधी तथा प्रेमाभक्ति का विशद चित्रण मिलता है।

(3) अहंकार का त्याग :— भगवद् प्राप्ति के लिए अहं का विगलन आवश्यक है। कबीर का कहना है कि मान और प्रेम परस्पर विरोधी तत्व हैं। कबीर के शब्दों में —

पिया चाहै प्रेम रस राखा चाहै मान।
इक म्यान में दुइ खड्ग देखी सुनी न कान॥

सूर और तुलसी आत्मार्पण को भगवद्दर्शन के लिए अनिवार्य मानते हैं। सूर में अहं का इतना विगलन हो गया था कि उनकी वाणी से सहज में ही फूट निकलता था — "प्रभु ही सब पतितन को टीको" तुलसी के सेव्य - सेवक में यत्र - तत्र दैन्य प्रस्फुटित हो उठता है — "सेव्य - सेवक भाव बिनु भव न तरिय उरगारि"।

(4) नाम की महिमा — संतों सूफियों

तथा सगुण साधकों ने कीर्तन भजन तथा नाम स्मरण को समान रूप से महत्व दिया है। तुलसी का कहना है कि "उलटा नाम जपत जग जाना" राम नाम जप नीच जायसी स्मरण की महिमा की महत्ता प्रदर्शित करते हुए कहते हैं कि "सुमिरौं आदि एक करतारू जेहि दीन्ह कीन्ह संसारू"। कबीर के नाम के महत्व को अनेक स्वीकार किया है। सूर की गुणात्मक ~~प्रेमाभि~~ प्रेमाभक्ति में कीर्तन, स्मरण एवं जप को पूरा-पूरा महत्व मिला है।

⑤ समन्वय की भावना — इस युग के सभी कवियों ने जीवन की समाज को धर्म की और दर्शन की विरोधी परिस्थितियों में एकता का सूत्र पिरोकर समन्वय किया है अव्यवस्थित परिस्थितियों में सामंजस्य प्रस्तुत करने का प्रयत्न ही कवियों के काव्य को ऊँचा उठा देता है।